Karuna Roy
Associate Professor
Department of Hindi
S. G. G. S. College, Patna City
e.mail - karuna_1812@yahoo.co.in.

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष (1)
पत्र - 2
गद्य की विविध विधायें -
निबंध - आचरण की सभ्यता
लेखक - सरदार पूर्णसिंह

आपलोगों ने गद्य की विविध विधाओं; उपन्यास, नाट
एवं कहानी का अध्ययन कर लिया है। सरदार पूर्णसिंह के निबंधों में विचार तत्त्व तथा भाव
तत्त्व दोनों का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। उनके निबंधों में
पैना अनुभव, परिपक्व समझ एवं भावुक दृष्टिकोण विषय के प्रति उनके
व्यापक ज्ञान को दर्शाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का इतिह
में उनका मूल्यांकन करते हुए लिखा है - "उनमें विचारों और भावों को एक
अनूठे ढंग से मिश्रित करनेवाली एक नई शैली मिलती है। उनकी लाक्षणिकत
हिन्दी गद्य-साहित्य में एक नई चीज थी। ...... योरोप के जीवन-क्षेत्र
की अशांति से उत्पन्न आध्यात्मिकता की, किसानों और मजदूरों की जो
लहरें उठीं, उनमें वे बहुत दूर तक गए। उनके निबंध भावात्मक कोटि में
ही आयेंगे, यद्यपि उनकी तह में क्षीण विचार-धारा स्पष्ट लक्षित होती है।"
शुक्लजी के अनुसार - पूर्णसिंह के निबंधों में विचारों
की प्रधानता न होकर उनके व्यक्तित्व की प्रधानता है। इसलिए उनके निबं
को हम ललित निबंध की श्रेणी में रख सकते हैं। उनके अन्य निबंधों,
जैसे 'मजदूरी और प्रेम' तथा 'सच्ची वीरता' में भी उनकी यही शैली है।
वे एक अध्यापक थे। इसलिए उनके विचार - उनकी अध्यापन कला की
विशेषताओं से युक्त हैं। प्रस्तुत निबंध में वे अपनी सभ्यता एवं सांस्कृतिक
प्रति श्रद्धा स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करते हैं। साथ ही वे उन लोगों पर व्यंग्य
भी करते हैं जो हमारी महान संस्कृति से अनभिज्ञ रहना चाहते हैं। सर्वप्रथम
आपलोगों की सुविधा के लिए प्रस्तुत निबंध का सारांश दिया जा रहा है -
सरदार पूर्णसिंह ने 'आचरण की सभ्यता' निबंध में विचा,
कला, कविता, साहित्य, धन और राजत्व सभी से अधिक शुद्ध आचरण
को महत्त्व दिया है। इसके लिए उन्होंने नम्रता, दया, प्रेम और उदारता को हृद
में स्थान देना आवश्यक बताया है। अच्छे आचरण वाले व्यक्ति के
प्रेम और धर्म से सारे जगत का कल्याण होता है। सभी व्यक्तियों को
सुख, शांति और आनंद की प्राप्ति होती है। वे शान्त एवं मौन रहकर जगत
की भलाई में लगे रहते हैं। सच्चे आचरण का प्रभाव सदैव मानव हृदय पर पड़त
है। जो धर्मगुरु सच्चे आचरण वाला होता है, उसकी बातें ही जनमन को स्पर्श
करती हैं, अन्यथा लोग कोरे भाषण से प्रभावित नहीं होते।

लेखक ने गरीब पहाड़ी किसान और शिकारी राजा के उदाहरण द्वारा सच्चे आचरण का राज स्पष्ट किया है कि किस तरह वह किसान अपने पवित्र आचरण द्वारा शिकारी के दूषित हृदय को बदल देता है। इस तरह पवित्रता एवं अपवित्रता दोनों से ही आचरण का निर्माण होता है। भले-बुरे विचार आचरण को बनाने में सहायक होते हैं। ~~बाह्य~~ बाह्य जगत के व्यापार सदैव अंतरात्मा को प्रभावित किया करते हैं। इन प्रभावों से ही आचरण का निर्माण होता अच्छे-अच्छे धार्मिक वक्ता, महात्मा और ऋषियों की बातें जब हमारे अंतःकरण को स्पर्श करती हैं, तब हम उनके जैसा आचरण करने लगते हैं। यदि हम उनके उपदेश सुनकर ~~आ~~ आचरण में उन्हें न उतारें तो हमारा उपदेश सुनना बेकार है। कोई भी धर्म अथवा संप्रदाय आचरण हीन व्यक्तियों के लिए कल्याणकारी नहीं हो सकता जबकि आचरण वाले व्यक्तियों के लिए सभी धर्म एवं सम्प्रदाय कल्याणकारी होते हैं। लेखक ने इसी कारण आचरण के विकास को जीवन का परम उद्देश्य बतलाया है। आचरण के विकास के लिए शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सामग्री के जुटाने पर बल दिया है। निष्कपट एवं सतत ~~परिश्रमी~~ परिश्रमी किसान को पूर्णसिंह अच्छे आचरण वाला मानते हैं।

लेखक अपनी स्थापना को लेकर दृढ़ है। वह स्पष्ट शब्दों में उल्लेख करता है कि केवल धर्म किसी जाति को उन्नत नहीं बनाता, अपितु कठोर जीवन, परिश्रम, लोभ एवं सतत प्रयत्न किसी जाति को उन्नत बनाते हैं। परिश्रम ही आचरण की सभ्यता का नियामक है। कभी भी अकर्मण्य तथा आलसी आचरण की सभ्यता को प्राप्त नहीं कर सकते। धार्मिक पुस्तकें तथा बाहरी आडंबर से शुद्ध आचरण की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसीलिए वे कहते हैं कि पहले प्राकृतिक सभ्यता प्राप्त करो। इससे मानसिक सभ्यता आयेगी और मानसिक सभ्यता के आते ही आचरण की सभ्यता प्राप्त होगी। इस तरह जो आचरण की सभ्यता को प्राप्त करता है उसके आगे ही शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक सभी झगड़े समाप्त हो जायेंगे। द्वेष, विद्रोह, ऊँच-नीच की भावना आदि का भेद समाप्त हो जायेगा, मानवतावाद की स्थापना होगी। इससे सर्वत्र प्रेम और एकता का अखण्ड राज्य स्थापित हो जायेगा।

पूर्णसिंह के व्यक्तित्व की मधुरता ने पूरे निबंध वस्तु को सरस एवं आत्मीय बना दिया है। उनके शुद्ध मनोभावों से जड़ तथा निर्जीव वस्तु भी सजीव और चेतन बन जाती हैं। कभी-कभी वे भावों की व्यंजना को स्पष्ट करते

क्रम में कल्पना लोक में विचरण करते हुए दूर तक निकल जाते हैं। बाद में पुनः वापस आकर ~~विषय~~ विषय से जुड़ते हैं। विचारों में पाण्डित्य होने के कारण वे सिर्फ अपने देश से ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में से कहीं से भी उदाहरण ढूँढकर लाते हैं। पाठकों के मानस की जिज्ञासा का समाधान करने के लिए वे कुतूहलपूर्ण रहते हैं। डॉ० प्रभाकर माचवे के अनुसार सरदार पूर्णसिंह की रचनाओं में रविकान्त सा आशीर्वाद मिलता है। उनके निबंध 'आचरण की सभ्यता से उद्धृत यह अंश उनके व्यक्तित्व की शुद्धता का परिचायक है-

"न मैं किसी गिरजे में जाता हूँ और न रोजा ही रखता हूँ। न संध्या ही करता हूँ न किसी आचार्य के नाम का मुझे पता है। और न किसी के आगे मैंने सिर ही झुकाया है। इन सबसे प्रयोजन ही क्या और हानि ही क्या? मैं तो अपनी खेती करता हूँ अपने हल और बैलों को प्रातःकाल उठकर प्रणाम करता हूँ, मेरा जीवन जंगल के पेड़ों और पक्षियों की संगति में बीतता है।"

सरदार पूर्णसिंह हिन्दी-साहित्य में द्विवेदी युग के श्रेष्ठ निबन्धकारों में गिने जाते हैं। मात्र छः निबंध लिखकर ये हिन्दी साहित्य के प्रमुख निबंधकारों में गिने जाते हैं। इनका जन्म 1881 ई० में सीमा प्रान्त के एबटाबाद जिले में हुआ था। ये रसायनशास्त्र (केमिस्ट्री) के अध्ययन के लिए जापान गये थे। वहीं स्वामी रामतीर्थ से इनकी भेंट हुई और वे सन्यासी बनकर भारत लौटे। यहाँ पुनः इनके विचारों में परिवर्तन हुआ और वे गृहस्थ जीवन में वापस आये। देहरादून के इम्पीरियल फॉरेस्ट इंस्टीट्यूट में इन्होंने अध्यापन कार्य किया। वहाँ भी इनका मन नहीं रमा। नौकरी छोड़कर वे जड़ाँवाला ग्राम में खेती करने लगे। कृषि कार्य में अर्थसंकट से ये नुकसान उठाते रहे। 1931 ई० में इनका निधन मात्र 50 वर्ष की अल्पायु में हो गया। इनके निबंधों में भावों का आवेग, कल्पना की उड़ान तथा स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं।

mobile No- 943188125